जुबान से कलिमा पढना

हजरत मौलाना जुल्फीकार नक्शबंदी दब.

नोट: आप से दरखास्त है की इसे
भाषा या ग्राम्मर का अदब ना समझे.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के यहा इसकी इतनी अहमियत है कि एक काफिर आदमी पूरी ज़िन्दगी गुनाहों में गुज़ार बैठा, जिस्म के बाल सफेद हो गये अगर वह दिल से कलिमा पढ लेता है तो उसकी भी मगफिरत फरमा देते है.

रिवायत में आता है कि जब कोई बंदा दिल से कलिमा पढता है तो एक फरिश्ता इस अमल को लेकर आसमानों की तरफ जाता है. अभी रास्ते में होता है कि उपर से नीचे आने वाले फरिश्ता से उसकी मुलाकात हो जाती है.

अब उपर से नीचे आने वाला फरिश्ता पूछता है कि कहां जा रहे हो? नीचे से जाने वाला फरिश्ता कहता है कि एक आदमी ने कलिमा पढा है, मे इस अमल को अल्लाह की हुजूर में पेश करने जा रहा हुं. फिर यह उपर से आने वाले फरिश्ते से पूछता है कि आप कहां जा रहे है? वह कहता है कि जिस आदमी ने कलिमा पढा है मे उसके लिये मगफिरत का पैगाम लेकर जा रहा हुं.

अब सोचिये जुबान से चंद बोल निकले, उसकी ज़िन्दगी के सब गुनाहों को माफ कर दिया.

दुनिया की अदालत का मामला देखा- किसी आदमी पर नाज़ायाज़ मुकद्दमा हो जाये, अदालत में पता भी चल जाये कि यह मुकद्दमा ज़ूठा है तो उस आदमी को इज्ज़त के साथ बरी कर दिया जाता है मगर अपने रिकार्ड में उस मुकद्दमे को दर्ज़ ज़रूर कर लिया जाता है. दुनिया की अदालत इज्ज़त से बरी भी कर दे मगर अपने पास मुकद्दमा दर्ज़ रखती है.

मगर अल्लाह तआला का मामला अज़ीब देखा, जिस बंदे ने वाकई गुनाह किये थे, वह गुनाह जो पहाडों से भी ज़्यादा वजनी थे अगर वह आदमी सच्ची तौबा कर लेता है तो यही नहीं कि उन गुनाहों को माफ कर दिया जाता है बल्कि अल्लाह तआला उन गुनाहों का रिकार्ड भी आमालनामे से खत्म करवा देते है.

हदीस पाक में आता है कि जिन फरिश्तों ने उस आदमी के गुनाहों को लिखा था अल्लाह तआला उन फरिश्तों की याददाश्त से भी गुनाहों को खत्म फरमा देते है ताकि कयामत के दिन गवाही न दे सकें. सुब्हानअल्लाह.

ज़बान से निकले हुवे कुछ बोलों ने क्या कुछ बदलवा दिया.

हवाला- उर्दु किताब "खुत्बाते फकीरी/१"
से इस्का लिप्यांतरण किया गया हे.